आर्यभट फाउंडेशन : एक परिचय

आर्यभट फाउंडेशन विज्ञान को बढ़ावा देने का एक विशेष अभियान है. इसकी शुरुआत 1995 में हुई थी, जो अब एक पंजीकृत सामाजिक संगठन का रूप ले चुका है. यह संगठन समाज के प्रति समर्पित लोगों के द्वारा चलाया जाता है, जो नई पीढ़ी को रोचक तरीकों से विज्ञान से जोड़ने का प्रयास करते हैं, जिससे उनमें विज्ञानमूलक सोच विकसित हो सके. यह संगठन शासकीय दान-अनुदान न ले कर स्वयं के पैसों से कार्य करने में विश्वास करता है और पिछले 30 सालों से लगातार कार्यरत है.

प्राचीन काल में लोग खगोलीय पिंडों को चिंता की नज़र से देखते थे. ग्रहों, नक्षत्रों और कॉमेट को सौभाग्य और दुर्भाग्य से जोड़ा जाता था. कॉमेट यानि पुच्छल तारे के बारे में तो डर का ही माहौल बनता था कि उसकी छाया भी आपदा का कारण बन सकती है. वैज्ञानिक ज्ञान के सहारे समाज को पता चला कि यह कैसे बनते हैं, और किस रास्ते चलते हैं. इस प्रकार इनके प्रति डर की भावना को दूर किया है. हम एस्ट्रोनॉमी के अंतर्गत इनका अध्ययन करते हैं, जिसे विज्ञान की सभी धाराओं की जननी माना जाता है.

एस्ट्रोनॉमी न केवल एक बढ़िया शौक है, बल्कि स्पेस-साइंस के लिए पहली सीढ़ी भी है. ऐसे समय में जब हम कैरियर के लिए नए क्षेत्रों के बारे में सोचने लगे हैं, यह शौक हमें अच्छे कैरियर के लिए नए रास्ते खोल कर दे सकता है.

आर्यभट द्वारा एस्ट्रोनॉमी को जन-जन तक पहुँचाने के किए कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो प्लैनेट्स, स्टार्स और गैलेक्सीज के बारे में सटीक वैज्ञानिक जानकारी दे कर लोगों के नज़रिए को व्यापक बनाते हैं. उस प्रकार एस्ट्रोनॉमी के माध्यम से अंधविश्वासों और डर को दूर किया जाता है. आर्यभट के पास एस्ट्रोनॉमी के लिए 30 से ज़्यादा टेलिस्कोप और विशेष उपकरण हैं.

आर्यभट द्वारा एक एस्ट्रोनॉमी क्विज का आयोजन किया जाता है, जिसमें जीतने वालों को बड़ी-बड़ी वेधशालाओं और इसरो से जुड़े बड़े प्रतिष्ठानों में जा कर वैज्ञानिकों से बात करने का अवसर प्राप्त होता है. आर्यभट से जुड़े छात्रों ने समय-समय पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, जिससे इस अभियान की सार्थकता सिद्ध होती है. बीते वर्षों में आर्यभट के बच्चों ने अंतर्राष्ट्रीय एस्ट्रोनॉमी ओलंपियाड में चार स्वर्ण और एक रजत पदक जीत कर और नासा के आरआरजीटीएम प्रोजेक्ट में नैशनल-सेमीफाइनालिस्ट बन कर राष्ट्र का नाम रोशन किया है.

आर्यभट की अपेक्षा है कि विद्यार्थियों को इस अभियान से जोड़ने के लिए उन्हें शिक्षकों, अभिभावकों और समाज के अन्य वर्गों से सहयोग मिलता रहे.